4 महाजन का कर्ज

- परिचयात्मक प्रश्न - निर्धन व्यक्ति साधन न होने पर किस प्रकार अपनी आवश्यकताएँ पूरी कर पाते हैं?
  - क्या अपनी आवश्यकताओं की पूर्ति के लिए हाथ फैलाने से सम्मान सुरक्षित रह पाता है?
- प्रतिबिंब - बालकों में सबके सम्मान की रक्षार्थ प्रेरक भाव भरना।
- परिकल्पना - क्या आप जानते है कर्ज लेने वाले व्यक्ति के सम्मान पर ग्रहण किस प्रकार लग जाता है?

बहुत समय पहले की बात है, वनवासी लोगों के क्षेत्र में भंयकर अकाल पड़ा। पेड़-पौधे सूख गए। जानवर चारा-पानी न मिलने से दम तोड़ने लगे। चारों और त्राहि-त्राहि मचने लगी। लोगों ने भगवान से प्रार्थना की। भगवान ने उस क्षेत्र के महाजन से वनवासियों की सहायता करने के लिए कहा। महाजन बोला, भगवान, जब अनाज बहुत पैदा होता है, तब ये लोग उसकी तनिक भी चिंता नहीं करते, बताइए अब अनाज उनकी चिंता क्यों करें?"

"हाँ, तुम ठीक कहते हो। परंतु तुम्हारे पास भंडार में काफी अनाज है। तुम्हें संकट के इस समय में इन लोगों की सहायता करनी चाहिए" भगवान महाजन को समझाते हुए बोले।

"भगवान, आपका आदेश सिर-माथे पर। परंतु मैं तो महाजन हूँ। चार पैसे अधिक मिलेंगे तो बेच दूँगा। आप इन लोगों को अनाज देने के लिए कर्ज चाहते हैं, तो मेरी बही में हस्ताक्षर कर दीजिए और कर्ज ले लीजिए," महाजन ने भगवान के आगे बही फैलाते हुए कहा।

"ठीक है, कर्ज दे दो, परंतु लोगों को अभी अनाज दो", भगवान बोले।

महाजन ने लिखा-पढ़ी की और भगवान के हस्ताक्षर करवाकर भंडार खोल दिया। अकाल के मारे लोगों को भूख की तड़पन से कुछ छुटकारा मिला और उनके प्राण बच गए।

अगले वर्ष बरसात का मौसम आया। बादलों ने आकाश में पूरा उधम मचाया, परन्तु वे बरसे नहीं। मौसम फिर सूखा ही रहा। लोगों ने फिर भगवान से प्रार्थना की। भगवान ने फिर महाजन से कहा। महाजन ने फिर कर्ज देकर गोदाम खोल दिया। इस बार उसने कर्ज के साथ ब्याज की बात भी बही में दर्ज कर दी। साथ ही यह भी कह दिया कि पुराना और वर्तमान दोनों ही कर्ज जल्दी चुकाने का प्रबंध किया जाए। भगवान ने अनाज की व्यवस्था के साथ ही सबको कर्ज के भुगतान की बात भी बता दी। सभी ने आश्वासन दिया कि अगली फसल पर कर्ज तथा ब्याज दोनों ही चुकता कर देंगे।

अब वनवासी तीसरे वर्ष अच्छी वर्षा और अच्छी फसल की प्रतीक्षा कर रहे थे। परंतु इंद्रदेवता ने बादलों से कह दिया था कि वनवासियों के क्षेत्र में थोड़ी- बहुत वर्षा ही करें। बादलों ने वैसा ही किया और वह क्षेत्र फिर से अकाल की पकड़ में बना रहा।

तीन वर्षों के लगातार अकाल से वनवासी हाहाकार करने लगे। उन्होंने फिर भगवान से विनती की। भगवान ने फिर से उसी महाजन से कर्ज लिया और अकाल पीड़ितों की मदद की।

महाजन ने भगवान को इस बार जरा आँखें तरेरकर कहा, "भगवान, कर्ज तो लेते जा रहे हो, परंतु पुराना मूल और ब्याज दोनों ही चुकाने की तरफ भी तो ध्यान दो।"

भगवान बोले। "फ्रिक मत करो, महाजन, तुम्हारा मूल और ब्याज दोनों ही पाई-पाई चुका देंगे।" परंतु दुर्भाग्य ने साथ न छोड़ा। चौथे वर्ष भी बादलों की लुका छिपी बनी रही। वे फिर से धोखा दे गए। अकाल निरंतर बना रहा। भगवान बिना किसी के विनती किए स्वयं अनाज उधार लेने के लिए महाजन के पास गए। महाजन ने तुरंत बही फैलाकर हिसाब बताते हुए पुराना कर्ज चुकाने को कहा। भगवान ने फिर हालात ठीक होते ही कर्ज चुकाने का वायदा किया। इस पर नाराज होकर महाजन ने उनका मुकुट छीनने की कोशिश की।

भगवान अपना मुकुट बचाने के लिए आगे-आगे भाग रहे थे और महाजन कर्ज के हिसाब की बही हाथ में लेकर उनका पीछा कर रहा था। अंत में दौड़ते-दौड़ते भगवान सेठ की पकड़ में आ ही गए। कहते हैं।

चाँद और सूरज महाजन और भगवान की यह लुका-छिपी देख रहे थे। उन्हें लगा कि कहीं कर्ज और ब्याज के भार से दबे भगवान का मुकुट सचमुच यह महाजन छीन ही न लें।

तभी चाँद ने सूरज से कहा, "भैया! किसी के सम्मान की प्रतीक पगड़ी या मुकुट उतरते हुए मैं नहीं देख सकता।" "हाँ, मैं भी किसी की इज्जत इस तरह खराब होते नहीं देख सकता," कह कर सूरज ने आँखें बंद कर लीं। चाँद ने भी ऐसा ही किया।

वनवासियों ने सूरज और चाँद के इस प्रकार आँखें बंद कर लेने को ग्रहण लगना बताया। सच ही कहा गया है, कर्ज लेने से सम्मान पर ग्रहण तो लग ही जाता है। स्वयं भगवान का भी तो सम्मान कर्ज लेने पर ही खतरे में पड़ा।

शब्दार्थ वनवासी =वन में रहने वाले। अकाल = वर्षा की कमी से फसल न होने पर, भोजन-पानी के संकट की स्थिति। त्राहि-त्राहि = दया या रक्षा के लिए गिडगिड़ाना। संकट = मुसीबत। प्रतीक्षा = इंतजार। निरंतर = लगातार। सम्मान = इज्जत।

अभ्यास-कार्य

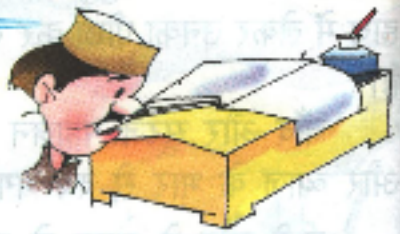

पाठ से

■ बहुविकल्पीय प्रश्न

(क) सही विकल्प के सामने ✓ लगाइए:

1. वनवासी त्राहि-त्राहि पुकारने लगे थे-
   (अ) महाजन के कारण ☐ (ब) अधिक वर्षा के कारण ☐ (स) अकाल के कारण ✓
2. 'तुम्हारे पास भंडार में काफी अनाज हैं, कहा-
   (अ) महाजन ने ☐ (ब) वनवासी ने ☐ (स) भगवान ने ✓
3. बादलों ने आकाश में पूरा उधम मचाया, परन्तु वे-
   (अ) पिघले नहीं ☐ (ब) बरसे नहीं ✓ (स) फैले नहीं ☐
4. अगले वर्ष फिर मौसम आया-
   (अ) गर्मी का ☐ (ब) सर्दी का ☐ (स) बरसात का ✓
5. भगवान के हस्ताक्षर करवाकर भंडार खोल दिया-
   (अ) देवताओं ने ☐ (ब) वनवासियों ने ☐ (स) महाजन ने ✓

(ख) उपयुक्त शब्द चुनकर रिक्त स्थान भरिए:

1. चार पैसे अधिक मिलेंगे तो बेच दूँगा (दस/चार/पाँच)
2. मेरी बही में हस्ताक्षर कर दीजिए। (रिपोर्ट/बही)
3. महाजन ने भगवान के हस्ताक्षर करवाकर भंडार खोल दिया। (वनवासियों/भगवान)
4. परंतु दुर्भाग्य ने वनवासियों का साथ न छोड़ा। (बादलों/दुर्भाग्य)
5. महाजन ने पुराना कर्ज चुकाने को कहा। (भगवान/महाजन)

(ग) सही कथन के सामने ✓ तथा गलत के सामने ✗ लगाइए:

1. महाजन को वनवासियों की बहुत चिंता थी। ✗
2. वनवासी महाजन से अनाज लेना नहीं चाहते थे। ✓
3. भगवान ने वनवासियों की चिंता की और अनाज का प्रबंध करवाया। ✓
4. महाजन अकाल में भी धन कमाना चाहता था। ✓
5. महाजन धन के सामने सब कुछ तुच्छ समझता था। ✓

(च) रेखा खींचकर परस्पर संबद्ध वाक्यांशों का सुमेल कीजिए:

1. अकाल से	(अ) हस्ताक्षर कर दीजिए।
2. संकट के समय	(ब) हाहाकार करने लगे।
3. आपका आदेश	(स) पेड़-पौधे सब सूख गए।
4. मेरी बही में	(द) लोगों की सहायता करनी चाहिए।
5. अकाल से वनवासी	(य) सिर माथे पर।

■ शुद्ध उच्चारण कीजिए:

त्राहि-त्राहि | ब्याज और मूल | हस्ताक्षर | तड़पन | सम्मान

■ इनके उत्तर लिखिए:

1. वनवासियों के सामने किस प्रकार का संकट उपस्थित हो गया था?
वनवासियों की वर्षा की कमी से फसल न होने पर भोजन-पानी का संकट उपस्थित हो गया था।

2. वनवासियों का संकट दूर करने के लिए भगवान ने क्या किया?
वनवासियों का संकट दूर करने के लिये भगवान ने उस क्षेत्र के महाजन से अनाज कर्ज पर लिया।

3. महाजन ने किस शर्त पर भगवान को कर्ज दिया?
महाजन ने अपने बही खाते में भगवान के हस्ताक्षर लेकर कर्ज दिया।

4. वनवासियों को अनाज किस प्रकार मिला?
महाजन ने बही खाते में लिखा पढ़ी कर भगवान के हस्ताक्षर लेकर अनाज वनवासियों में बांट दिया।

5. भगवान कर्ज से मुक्त क्यों न हो सके थे?
भगवान कर्ज से मुक्त इसलिये न हो सके क्योंकि लगातार 4 वर्षों से बारिश नहीं होने से फसल नहीं हुआ था।

6. महाजन ने अपना कर्ज वसूलने के लिए क्या प्रयास किया?
महाजन ने अपना कर्ज वसूलने के लिये भगवान का मुकुट छीनने का प्रयास किया।

भाषा की बात

(क) क्रिया पदों पर गोला खींचिए :

1. कर्ज चुकाने की तरफ भी ध्यान दो।
2. आकाश में काली घटाएँ घिर आईं।
3. अच्छी बारिश हो तो अच्छी फसल होती है।
4. भंडार में काफी अनाज है।
5. तीसरे वर्ष खूब वर्षा हुई।
6. चौथे वर्ष भी बादलों की लुका-छिपी चलती रही।

चुकाना
घिरना
होना
काफी होना
वर्षा होना
चलना

(ख) सही वर्तनी पर ✓ लगाइए :

1. आनाज		2. त्राही-त्राही		3. प्रतिक्षा	
अनाज	✓	त्राहि-त्राहि	✓	प्रतीक्षा	✓
4. हाहाकार	✓	5. गोदाम	✓	6. महाजन	✓
हाहकार		गौदाम		माहाजन	

(ग) इनके लिए वाक्यांश लिखिए :

1. किए हुए उपकार को मानने वाला — कृतज्ञ
2. किए हुए उपकार को न मानने वाला — कृतघ्न
3. कम ज्ञान रखने वाला — अल्पज्ञ

(घ) व्यक्तिवाचक संज्ञा चुनकर लिखिए :

1. दिल्ली भारत की राजधानी है। — दिल्ली
2. राकेश को भीतर ले जाओ। — राकेश
3. राजा दशरथ अयोध्या में शासन करते थे। — दशरथ
4. अर्जुन ने बाण चलाकर मछली को भेद दिया। — अर्जुन
5. प्रहलाद ने भगवान से प्रार्थना की। — प्रहलाद
6. सोनू ने गेंद खो दी। — सोनू
7. दुर्भाग्य ने रामू का पीछा न छोड़ा। — रामू

कुछ करने की बात

● प्रस्तुत कहानी को अपने शब्दों में कक्षा में सुनाइए।